दुर्गा

साहित्यिक वार्षिक पत्रिका। संस्करण - 14। सत्र - 2025-26

ओरिएंटेशन कार्यक्रम

हिंदी दिवस

वागर्थ 2025 - 26

वागर्थ 2025 - 26

हमारे कक्षा

रेणु मैम का जन्मदिन

बिंदु अग्रवाल छात्रवृत्ति समारोह

बिंदु अग्रवाल छात्रवृत्ति समारोह

पर्यावरण सप्ताह

शुभकामना संदेश

डॉ. कनिका आहूजा
प्राचार्या
लेडी श्री राम कॉलेज

हिंदी विभाग की पत्रिका 'दूर्वा' के प्रकाशन के लिए सर्वप्रथम हिंदी विभाग को शुभकामनाएं। जिस प्रकार दूर्वा जीवटता के अपने विलक्षण गुणों से युक्त होकर संसार को प्रेरित व प्रोत्साहित करती है, उसी प्रकार हिंदी विभाग की यह पत्रिका दूर्वा छात्राओं को अपने कर्त्तव्य ,उद्देश्य, श्रेष्ठ प्रदर्शन ,रचनात्मक गुणवत्ता के लिए प्रोत्साहित व प्रेरित करती रहे। हिंदी विभाग को 'दूर्वा' पत्रिका के प्रकाशन के लिए हृदय से बधाई।

डॉ.पूनम मीणा
शिक्षक सलाहकार
हिंदी साहित्य सभा
लेडी श्रीराम कॉलेज फॉर वीमेन

हिंदी विभाग की रचनात्मक गतिविधियों का मंच 'दूर्वा' इस बार भी हमारे समक्ष पठन के लिए प्रस्तुत है। यह पत्रिका छात्राओं की कार्य क्षमता,धैर्य ,रचनात्मक निरंतरता का पर्याय है हमारे लिए यह उत्साह और हर्ष का विषय है कि पत्रिका ने अपने इस उद्देश्य और गरिमा को बनाए रखा है । यह पत्रिका सूर्य के प्रकाश की तरह छात्राओं का पथ प्रदर्शित करती रहे और निरंतर गतिमान रहे इसी शुभाशीष के साथ दूर्वा के 2025- 26 अंक के लिए छात्राओं को हृदय से बधाई।

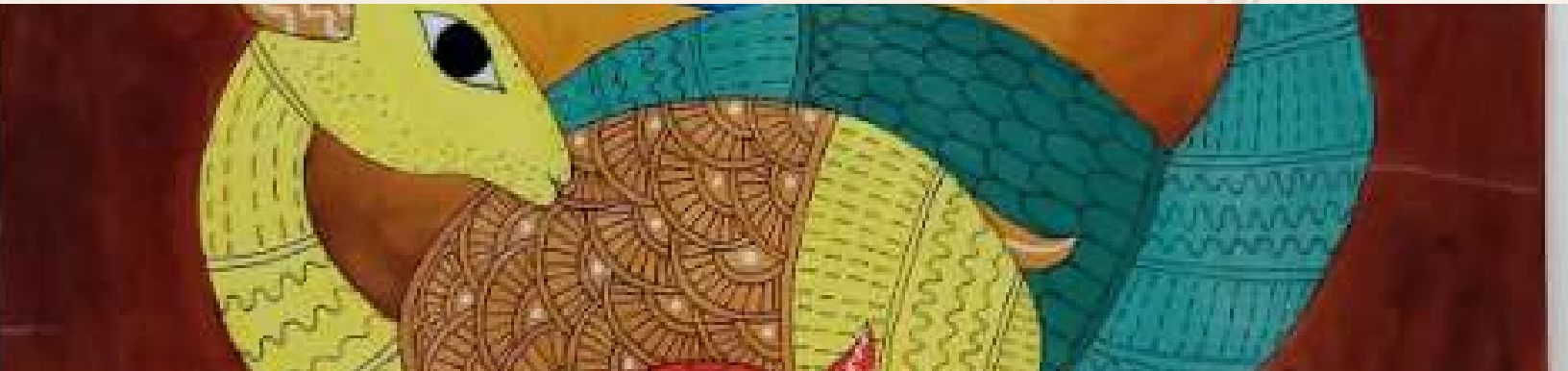

संपादकीय

"भविष्य भाषा में नहीं, भाषा उपयोग करने वालों में है।"

अर्चना पैन्यूली का ये वाक्य किसी भी भाषा का महत्व समझने के लिए सूत्र वाक्य है। साहित्य के विद्यार्थी होने के कारण हमें यह अवसर मिला कि हम मानव संवेदना का अपने भीतर परस्पर विकास कर सकें। यह संवेदना मात्र साहित्य के पन्नों का विश्लेषण करते समय ही हम जागृत नहीं करते। यह संवेदना समाज के सूक्ष्मतम असामंजस्यों से टकराने पर हमें रुकने, सोचने और अपने विचारों को विकसित करने पर विवश करती है। प्रेमचंद के अनुसार, यह संवेदना ही हमें उस असमानता को पहचानने पर मजबूर करती है, जो समाज में कुरूपता लाती है।

हिंदी साहित्य सभा की वार्षिक पत्रिका 'दूर्वा' के 14 वें संस्करण का कार्य जब प्रारंभ हुआ, तब उसके मूल में यही विचार था कि हिंदी भाषा तथा साहित्य के विद्यार्थी (या पाठक) होने के नाते ना सिर्फ़ हम अपनी भाषा के भविष्य में योगदान दें बल्कि अपनी रचनाओं से उन सभी विचारों को सामने लायें जो हमें झकझोरती हैं या केवल कुछ पल के लिए ठहरने को मजबूर करती हैं।

समाज की कुरूपता को पहचानना रसिकों के लिए साधारण है। पर उन असमानताओं के विरोध में आवाज उठाना साहस भरा कार्य है। किसी भी सामाजिक कुरीति को बदलने का पहला कदम उसे पहचानना है। फिर आता है उस समस्या को एक नाम देना, समाज के सामने लाकर उसे रखना, ताकि समाज उस समस्या से और मुंह ना मोड़ सके। 'दूर्वा' के इस संस्करण का यही उद्देश्य रहा कि यह छात्राओं को वह मंच दे सके, जहाँ उनके इन विचारों को पढ़ा जाए, समझा जाए तथा इन विचारों को कुछ पल अपने भीतर भी स्थान दिया जाए।

जिन्होंने भी इस संस्करण के लिए अपनी रचनाएं दी और जो भी इन रचनाओं को पढ़ने जा रहे हैं, उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएं। आशा है आप साहित्य से जुड़े रहेंगे तथा समाज की कुरूपताओं पर आवाज उठाकर, एक सुंदर समाज की कल्पना को साकार करेंगे। यदि इस अंक में कोई त्रुटियाँ हो तो उसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं।

आशा है की आपको यह अंक पसंद आयेगा।

संपादक

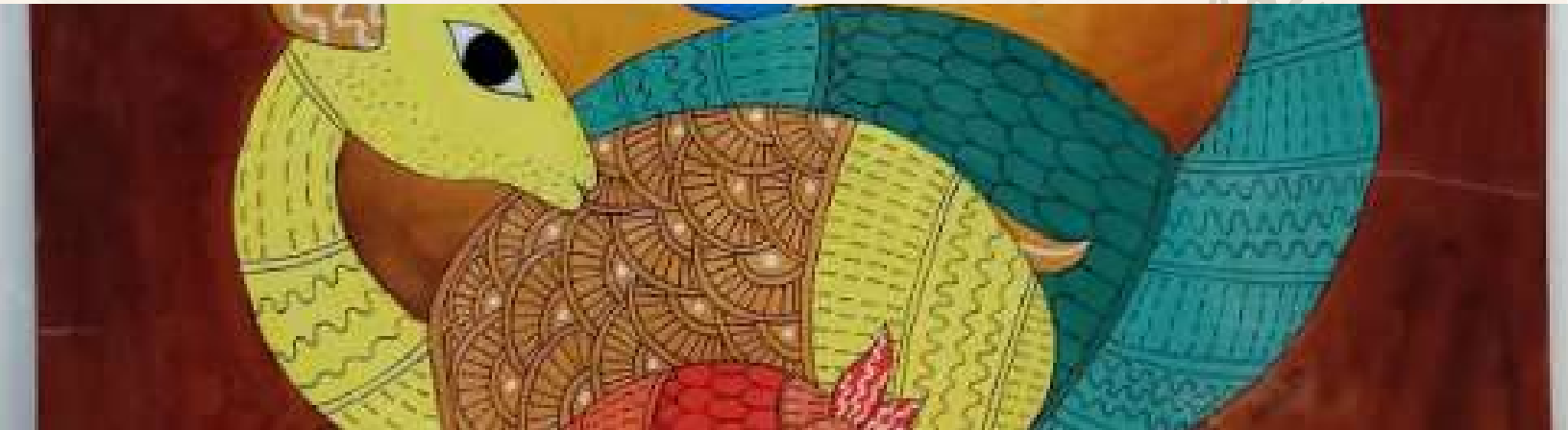

दूर्वा

संस्करण 14 | 2025-26

शिक्षक सलाहकार

- डॉ.पूनम मीणा
- डॉ. रेणु गौतम

(कार्यकाल: 1 अगस्त - 18 नवंबर 2025 तक)

संपादक

समृद्धि मिश्रा

डिज़ाइन

समृद्धि मिश्रा
हिमांशी सिंघल

इस अंक में

शुभकामना संदेश

संपादकीय

1. संगीत और दर्शन
2. पुस्तक समीक्षा: व्हीलचेयर
3. भोजपुर के अमर सपूत
4. सफलता का रहस्य
5. क्या यह सुकून की तलाश है?
6. मन में रह गया कुछ
7. वो गुरु, जो आज भी प्रेरणा हैं
8. माँ: आधुनिक समय का मौन रहस्य
9. नींद का सफर (बस नंबर - 425)
10. गांव से आई लड़की की शहर में मौज मस्ती
11. यादों का सफर
12. ठहरने की ज़रूरत है तुम्हें
13. विवशता के पहिए
14. हिंदी: मेरी आवाज
15. स्मृति लेख (एक प्रेरक शिक्षिका की स्मृति में)
16. 'मुझे पहचानो': पात्र विश्लेषण
17. आर्ट गैलरी

विनम्र श्रद्धांजलि

विभागीय गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

हिंदी साहित्य सभा

संगीत और दर्शन

संगीत और दर्शन का संबंध हिंदी साहित्य में अत्यंत गहराई से दिखाई देता है। हिंदी साहित्य केवल शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि उसमें भाव, अनुभूति और चिंतन का सुंदर समन्वय मिलता है। जिस प्रकार दर्शन जीवन के सत्य, अस्तित्व और आत्मा के प्रश्नों पर विचार करता है, उसी प्रकार हिंदी साहित्य इन दार्शनिक विचारों को भावपूर्ण भाषा और संगीतात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से प्रस्तुत करता है।

भक्ति कालीन साहित्य इसका सबसे प्रमुख उदाहरण है। संत कवियों ने अपने काव्य में दर्शन और संगीत दोनों को एक साथ पिरोया। कबीर, सूरदास और मीरा के पदों में गहन दार्शनिक चिंतन के साथ-साथ संगीतात्मक लय भी मिलती है। उनके भजन को केवल पढ़ा नहीं जाता, बल्कि गाया और महसूस किया जाता है। इससे उनके विचार सीधे हृदय तक पहुँचते हैं।

हिंदी साहित्य में छंद, अलंकार और लय का प्रयोग इसे संगीत से जोड़ता है, वहीं इसके विषय और विचार इसे दर्शन से भी संबंधित बनाते हैं। छायावादी कवियों ने भी अपने काव्य में आत्मा, प्रकृति और जीवन के गहरे प्रश्नों को भावपूर्ण और संगीतात्मक शैली में व्यक्त किया। उनकी रचनाओं में सौंदर्य और भावनात्मकता के साथ-साथ दर्शन की गंभीरता और संगीत की कोमलता, दोनों का संतुलन मिलता है।

इस प्रकार हिंदी साहित्य, संगीत तथा दर्शन के सेतु का कार्य करता है। दर्शन जहाँ विचारों की गहराई देता है, वहीं संगीत साहित्य को भावनात्मक और प्रभावशाली बनाता है। दोनों मिलकर पाठक को केवल ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि उसे आत्मानुभूति और आंतरिक शांति की ओर भी ले जाते हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य में संगीत और दर्शन का संबंध जीवन के सत्य को सरल, सुंदर और हृदयस्पर्शी रूप में प्रस्तुत करता है।

निशा रावत, तृतीय वर्ष, हिंदी विभाग

मोहिनी, द्वितीय वर्ष, हिंदी विभाग

पुस्तक समीक्षा : व्हीलचेयर

लेखक : ज्ञान प्रकाश विवेक
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन
प्रकाशन वर्ष : 2023

ज्ञान प्रकाश विवेक हिंदी साहित्य के एक वरिष्ठ और संवेदनशील रचनाकार हैं। उन्होंने अपनी लेखनी से हमेशा समाज के उन पहलुओं को उठाया है जिन्हें अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। उनका उपन्यास "व्हीलचेयर" भी इसी श्रृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है जो 2023 में वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुई। यह उपन्यास एक दिव्यांग व्यक्ति के जीवन-संघर्ष को बड़ी बारीकी और सहजता से पाठक के सामने रखता है।

उपन्यास का मुख्य पात्र एक ऐसा व्यक्ति है जो किसी दुर्घटना के बाद व्हीलचेयर पर आ जाता है। पहले जो इंसान अपने पैरों पर खड़ा होकर दुनिया देखता था, वह अब चार पहियों की एक छोटी सी कुर्सी पर निर्भर हो जाता है। लेकिन लेखक ने केवल उसकी शारीरिक पीड़ा को नहीं दिखाया — असली पीड़ा तो तब शुरू होती है जब उसके अपने ही उसे बोझ समझने लगते हैं। परिवार में पत्नी की उदासीनता, बच्चों की शर्मिंदगी और पड़ोसियों की दया भरी नजरें — यही सब मिलकर उसे अंदर से तोड़ने की कोशिश करते हैं। उपन्यास में एक जगह मुख्य पात्र सोचता है कि "लोग मेरी व्हीलचेयर देखते हैं, मुझे नहीं" — यह एक पंक्ति पूरे उपन्यास की आत्मा को बयान कर देती है।

उपन्यास में एक प्रसंग बहुत प्रभावशाली है जब मुख्य पात्र किसी सरकारी दफ्तर में अपना काम कराने जाता है। वहाँ न तो रैंप है, न कोई सहायता करने वाला। घंटों इंतजार के बाद एक बाबू उसे यह कहकर टाल देता है कि "कल आना।" यह दृश्य हमारी व्यवस्था की उस क्रूर सच्चाई को उजागर करता है जो कागजों पर तो दिव्यांगजनों के अधिकारों की बात करती है लेकिन व्यवहार में उन्हें इंसान भी नहीं समझती।

एक अन्य महत्वपूर्ण प्रसंग में उपन्यास का पात्र एक युवा लड़की से मिलता है जो खुद भी दिव्यांग है लेकिन जीवन के प्रति पूरी तरह सकारात्मक है। वह उससे कहती है कि "व्हीलचेयर हमें चलने से नहीं रोकती, यह तो हमें एक नई दिशा देती है।" यह संवाद उपन्यास में एक महत्वपूर्ण मोड़ लाता है और मुख्य पात्र के टूटे हुए मनोबल को फिर से जगाने का काम करता है। धीरे-धीरे वह अपनी परिस्थिति को स्वीकार कर समाज से लड़ने की ताकत जुटाता है।

भाषा की दृष्टि से यह उपन्यास बहुत सरल और पठनीय है। ज्ञान प्रकाश विवेक ने बड़ी-बड़ी शब्दावली से बचते हुए आम आदमी की भाषा में गहरी बात कही है। उनके संवाद जीवन से सीधे उठाए हुए लगते हैं। पात्रों की मनोदशा का चित्रण इतना सजीव है कि पाठक खुद को उनसे जुड़ा हुआ महसूस करता है।

कुल मिलाकर "व्हीलचेयर" केवल एक दिव्यांग व्यक्ति की कहानी नहीं है — यह हम सबकी कहानी है। यह उपन्यास हमें सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम वाकई एक संवेदनशील समाज हैं? क्या हम अपने आसपास के दिव्यांगजनों को सम्मान की नजर से देखते हैं? यह एक जरूरी और समय की माँग वाली रचना है जिसे हर पाठक को अवश्य पढ़ना चाहिए।

खुशबू, तृतीय वर्ष, हिंदी विभाग

भोजपुर के अमर सपूत

भोजपुर के पावन माटी में जनमल
एगो वीर महान,
कुँवर सिंह जइसन नाम
देश खातिर रखलन मान।
अस्सी बरिस के उमर में
उठल आजादी के ललकार,
अंगरेजन से डट के लड़लन,
ना मनलन कबहूँ हार।
गोली लागल भुजा में,
तबहूँ हिम्मत ना डोलल,
काट के भुजा गंगा मइया के चरणन में ऊ अर्पल।
देश प्रेम के ज्वाला दिल में सदा प्रज्वलित रहल,
भोजपुर के माटी में उनकर यश अमर बन के बसल।
आजुओ उनकर वीरता के गाथा गावल जाला,
हर भोजप्रिया के दिल में उनकर नाम बसल रहेला।
अइसन वीर सपूत पे हमनी के सदा अभिमान बा,
वीर कुँवर सिंह से भोजपुर के असली पहचान बा।

कृति सिंह, द्वितीय वर्ष, हिंदी विभाग

सफलता का रहस्य

"आपकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि आप अपने लक्ष्य के लिए कितने समर्पित हैं।"
स्वामी विवेकानंद

अगर सफलता एक कहानी होती, तो हर कोई उसका नायक बनना चाहता। लेकिन इस कहानी का सबसे दिलचस्प हिस्सा यह है कि इसमें कोई जादू मोड़ नहीं होता। यह छोटे-छोटे प्रयासों, असफलताओं और सीख से मिलकर बनती है।
सफलता हर व्यक्ति का सपना होता है, लेकिन इसका असली रहस्य केवल मंजिल तक पहुंचने में नहीं, बल्कि उस सफर में छिपा होता है जो हमें वहां तक ले जाता है। आज के समय में लोग जल्दी सफलता पाना चाहते हैं, पर सच्ची सफलता धैर्य मेहनत और निरंतर प्रयास से ही मिलती है। हर सफल व्यक्ति के पीछे कई असफलताएं होती हैं जो आगे बढ़ने की सीख देती है। सफलता का सबसे बड़ा आधार है खुद पर विश्वास और सही दिशा में किया गया प्रयास। केवल मेहनत ही नहीं बल्कि समझदारी से मेहनत करना भी जरूरी है। हमें दूसरों से तुलना करने के बजाय अपने आप को बेहतर बनाने पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि हर व्यक्ति की यात्रा अलग होती है।
कभी-कभी रास्ता कठिन लगता है और मंजिल दूर दिखाई देती है, लेकिन यही पल हमें सबसे अधिक मजबूत बनाते हैं, जब हम अपने डर और संदेह पर जीत हासिल कर लेते हैं। तभी हमारा असली विकास होता है। सफलता केवल बाहरी उपलब्धियों का नाम नहीं है बल्कि यह हमारे भीतर के आत्मविश्वास और संतुष्टि से भी जुड़ी होती है। जो व्यक्ति हर परिस्थिति में सकारात्मक सोच बनाए रखता है, वही जीवन में आगे बढ़ पाता है। सफलता कोई जादू नहीं बल्कि निरंतर प्रयास, सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास से हासिल होने वाला परिणाम है।

सोनम सिंह, प्रथम वर्ष, हिंदी विभाग

क्या यह सुकून की तलाश है?

मेट्रो में अपने सफर के दौरान मैंने देखा कि सब लोग भाग-दौड़ कर रहे हैं। किसी के पास, किसी के लिए भी समय नहीं है, शायद खुद के लिए भी नहीं। भोजन भी मेट्रो में ही होता है। इसी के साथ आज संबंधों के बीच में भी बहुत बड़ी दीवार आकर खड़ी हो गई है। बच्चों के पास माता-पिता के लिए समय नहीं होता और हम भी काम में व्यस्त रहने के कारण कई बार माता-पिता की बातों को अनसुना कर टाल देते हैं और फिर कभी-कभी जब पीछे मुड़कर देखते हैं, तो हमें उस बात का सदा पछतावा होता है कि शायद हमें उस समय उनकी उस बात को सुन लेना चाहिए था। उनसे बात कर लेनी चाहिए थी। वर्तमान समय में लोगों को अपने दोस्त के लिए भी समय नहीं मिल पाता। लोगों ने एक दूसरे से बात करना और खास कर एक दूसरे के मनोभावों को, उनकी व्यथा, दुख-परेशानी को सुनना और समझना तो बंद ही कर दिया है। किसी भी व्यक्ति को दूर से देखकर उसके मनोभावों का पता लगाना संभव नहीं। हमें लगता है कि कोई अगर मुस्कुराक बात कर रहा है तो वह खुश ही होगा, पर यह शायद हमेशा सही नहीं होता। आज के समय में तो खास कर नहीं।

आज हमने वह कार्य करना तो बंद ही कर दिया है जिससे हमें सुकून का एहसास होता था। माता-पिता के साथ बात करते हुए भोजन पकाना फिर करना या अपना पसंदीदा कार्य करना जैसे अपने मित्रों के साथ बिना समय की परवाह किए ढेर सारी बातें करना, घूमना फिरना, नृत्य करना, संगीत गाना, पौधों को लगाना या कुछ ना कर सके तो केवल अपने साथ कुछ पल बैठकर अपनी पसंदीदा किताब पढ़ना, अपनी पसंदीदा जगह पर अकेले घूमने जाना और सुकून से अपने साथ एक पल व्यतीत करना। यह सब आज के समय में शायद बंद हो गया है और यही वर्तमान समय की सबसे बड़ी विडंबना है। हम भौतिकवादी वस्तुओं की ओर इतने अग्रसर हो गए हैं कि स्वयं को, परिजनों व मित्रों को भूलते चले जा रहे हैं। उनके लिए समय भी नहीं निकाल पाते। यह भौतिकवादी वस्तुएं हमें कुछ समय तक ही खुशी देती है। एक समय के बाद हमें उसी सुकून और प्रेम की तलाश होती है, जो हमें हमारे पसंदीदा कार्य करने से और स्वयं के साथ, अपनों के साथ समय व्यतीत करके प्राप्त होता है।

इस भागदौड़ भरे जीवन में भी हमें कुछ समय अपने उस सुकून को देना चाहिए जिसके लिए यह भाग दौड़ की जा रही है। इस जीवन में कभी भी स्वयं को व अपने प्रिय जनों को ना भूले क्योंकि असली सुख व शांति बड़ी-बड़ी वस्तुओं में नहीं बल्कि उन छोटी चीजों में है जिसे अक्सर हम नजरअंदाज कर देते हैं।

प्रकृति सिसोदिया, तृतीय वर्ष, हिंदी विभाग

मन में रह गया कुछ

मन के किसी कोने में
आज भी
एक छोटा-सा सवाल बैठा है,
पर वह घबराया हुआ नहीं,
बस थोड़ा उलझन में है।
जैसे पहली बार
राजनीति को समझने निकला हो।
बाहर, चौराहे पर,
लोग बातें कर रहे हैं,
इतनी सारी कि
हर बात
अधूरी रह जा रही है,
और अधूरी बातें
कभी-कभी
पूरी सच्चाई जैसी लगने लगती हैं।
किसी ने हँसते हुए कहा-
“सब ठीक चल रहा है।”
और बाकी लोग भी हँस दिए,
जैसे यह वाक्य
एक साझा मज़ाक हो
जिसे हर कोई समझता है,
पर कोई समझाता नहीं।
घर के भीतर
चाय उबल रही है,
टीवी पर बहस,
और बीच में
एक बच्चा पूछता है-
“ये लोग इतना क्यों बोलते हैं?”
कोई जवाब नहीं देता
पर सबको,
थोड़ा-थोड़ा पता होता है।
मन के उसी कोने में
अब एक और खयाल आता है,
कि शायद...
इतना सोचना भी ठीक नहीं,
थोड़ा हल्का रहना चाहिए,
जैसे लोग रहते हैं,
मुस्कुराते हुए,
सिर हिलाते हुए,
और सही समय पर
चुप हो जाते हुए।
क्योंकि यहाँ
सवाल पूछना
कोई बड़ी बात नहीं,
बड़ी बात है कि
उसे कब भूल जाना है;
और हम,
धीरे-धीरे सीख ही जाते हैं
कि देश चलाना...
शायद उतना मुश्किल नहीं,
जितना
उसे समझना है।

श्रेया माधवी, द्वितीय वर्ष, हिन्दी विभाग

वो गुरु, जो आज भी प्रेरणा हैं

कुछ घटनाएं और यादें वक्त के साथ धुंधली नहीं हुआ करती, बल्कि गहरी होती जाती है।मेरे विद्यालय जीवन का सबसे बेहतरीन वर्ष आठवीं कक्षा थी, जिसका सबसे प्रमुख कारण हमारे अंग्रेजी के अध्यापक (विष्णु जी सर) थे। 2019 का वह साल आज भी मुझे उतनी ही स्पष्टता से याद है।

हम प्रत्येक अध्यापक अथवा शिक्षक को गुरु का दर्जा नहीं दे सकते क्योंकि अध्यापक आपको अध्यापन का कार्य करवा स्वयं को अपने कर्तव्य से मुक्त कर देता है, और शायद इसमें कुछ गलत भी नहीं किंतु मैंने और मेरे अन्य सहपाठियों ने प्रथमत: हमारे अंग्रेजी के सर को गुरु के रूप में पाया। आज आठवीं कक्षा के उसे बैच के समस्त विद्यार्थियों के लिए सर का प्रत्येक वाक्य ,स्वभाव और विद्यार्थियों के प्रति उनका रवैया एक आदर्श बन चुका है जिन मानदंडों को हम प्रत्येक गुरु में ढूंढने का प्रयत्न करते हैं।

आइए एक ऐसे व्यक्तित्व के बारे में आपके साथ मैं कुछ साझा करती हूं, जिनके संस्कारों की छाप विवेक विद्या मंदिर सांचौर,जालौर के 2019 के बैच के प्रत्येक विद्यार्थी पर है।शायद यह आपने भी अनुभव किया होगा कि हिंदी और अंग्रेजी के अध्यापक केवल अध्यापक कभी नहीं होते उनकी आत्मीयता दुर्लभ है।विष्णु सर जी ने कभी पाठ्यक्रम पूर्ण करवाने का प्रयत्न नहीं किया किंतु सभी बच्चों के सर्वाधिक अंक उन्हें के विषय (अंग्रेजी) में आते थे। उनके व्यक्तित्व की जो सर्वाधिक रोचक बात मुझे लगी वह यह थी कि वह कभी स्कूल में कुर्सी पर नहीं बैठते थे (मध्यांतर के अलावा) , और यह उन्होंने अपने गुरु से सीखा था।

इस तकनीकी युग में भी वे विद्यालय केवल बटन वाला अर्थात कीपैड फोन लेकर आया करते थे। उनकी सादगी हमें बापू के कुछ उच्च मूल्यों की याद दिलाती थी, पूरे साल वह स्कूल केवल दो जोड़ी कपड़े पहन कर आते थे, क्योंकि उन्हें कपड़ों और बाहरी भौतिकता पर पैसा खर्च करना संसाधनों की बर्बादी और अनावश्यक लगता था।

सर का एक ध्येय वाक्य था “विचारों से आजाद रहिए किंतु संस्कारों से बंधे रहिए”। जिसे वे स्वयं चरितार्थ करते थे।
वे कहा करते थे अगर ‘बिच्छू आपको काट कर यह सीख दे रहा है कि वह अपना कर्म कर रहा है,अपना कर्तव्य निभा रहा है बिना परिणाम की परवाह किए तो वह भी गुरु है आपका’।
सर का यह कथन कि, “जीवन में भले कितनी ही ऊंचाइयां छू लो बेटा स्वयं को निम्न और कमतर ही आंकना, इससे तुम्हारे निखरने और सवरने के अवसर कई गुना बढ़ जाएंगे”, हमें अहम् भाव से दूर रहने की सीख देते हैं।

हमारे बैच के लिए सर की अंतिम पंक्तियां यही थी कि, “मुझे यकीन है आप लोगों को मुझसे बेहतर अनेक अध्यापक एवं शिक्षक मिलेंगे किंतु मुझे आपके जैसे बच्चे कभी नहीं मिल सकते,आप शायद मुझे इस परिसर के बाहर भूल जाए किंतु मुझ में आप सभी बच्चे सदैव जीवंत रहेंगे”। ना हम उस समय कुछ प्रति उत्तर दे पाए थे, ना आज तक सर से कोई संपर्क हो पाया कि उन्हें बता सके कि उनके विद्यार्थियों का संपूर्ण व्यक्तित्व ही उनकी देन हैं। जीवन की विकटतर परिस्थितियों में आपका स्मरण मात्र ही मुझे जिजीविषा और प्रेरणा से भर देता है। इन बातों से उनके व्यक्तित्व को जानने का प्रयत्न करना समुद्र की एक लहर को समझने का प्रयत्न करने के समान है। सर के नाम के अलावा हमारे पास उनके बारे में कोई जानकारी नहीं है, फिर भी एक विश्वास है कि जीवन के किसी पड़ाव पर उनसे हमारी भेंट अवश्य होगी।

रिद्धि राजपूत, तृतीय वर्ष, हिंदी विभाग

माँ : आधुनिक समय का मौन रहस्य

इस शोर भरे समय में,
जहाँ सब कुछ ऑनलाइन है,
लेकिन माँ अब भी
ऑफलाइन प्रार्थना जैसी है।
मेरे हाथ में फोन है,
पर जब मन टूटता है
तो नेटवर्क नहीं
माँ की चुप्पी काम आती है।
वह जानती है,
मेरी आँखों की थकान,
बिना स्टेटस देखे,
मेरी हालात पढ़ लेती है।
इस तेज दुनिया में
जहाँ रिश्ते अपडेट माँगते हैं,
माँ का प्रेम कभी अपडेट नहीं चाहता।
वह मेरे कमरे के बाहर
धीरे से रुक जाती है,
जैसे जानती हो कि हर
सवाल का उत्तर शब्दों में नहीं होता।
माँ अब भी मेरी फिक्र ऐसे करती है,
जैसे समय अब भी सरल हो।
इस बदलते युग में
माँ एक रहस्य है
जो आधुनिक होकर भी
सबसे प्राचीन सच है।

सोनम, प्रथम वर्ष, हिंदी विभाग

नींद का सफर

[बस नंबर – 425]

अपने महाविद्यालय में न्यायालय, न्याय और सत्य के आदर्शों के बारे में ढेरों ज्ञानवर्धक बातें सुनने के बाद मैं घर लौटने के लिए बस स्टैंड पर खड़ी बस की प्रतीक्षा कर रही थी। सुबह से न्याय और सत्य पर इतनी गंभीर बातें समझते-समझते मेरा मस्तिष्क मानो थोड़ा विश्राम माँगने लगा था। शायद इसी कारण मेरी आँखें भी धीरे-धीरे यह संकेत देने लगी थीं कि अब कुछ देर के लिए संसार की जटिलताओं से विराम लेकर नींद की सरल दुनिया में प्रवेश कर लिया जाए। सोने की चाह और किताबों का बोझ लेकर मैं अपने गंतव्य की ओर जाने वाली बस का इंतज़ार कर रही थी। मुझे इंतज़ार बस का था, पर मानो नियति को कुछ और ही मंजूर था। जैसे-जैसे मिनट बीतते गए, प्रतीक्षा का समय घंटों-सा प्रतीत होने लगा। बहुत देर प्रतीक्षा करते-करते मन में यह विचार आने लगा कि अब तो थक जाऊँगी।

इसी बीच एक बस आती दिखी। नदी को चीरते हुए नाव जैसी। उस बस के नंबर को मेरी नींद भरी आँखें भी साफ़ देख न सकीं। अन्य विद्यार्थियों के पीछे, नींद के बोझ तले दबा मेरा शरीर उस बस में पवन की गति से सवार हो गया। खाली सीट पाते ही मेरी आँखें बंद हो गईं- मानो उन्हें बस इसी क्षण का इंतज़ार हो। नींद में चूर मैं इस बात से अनजान थी कि जिस रथ पर मैं सवार हूँ उसका वाहक तो उस जगह से अनजान है जहाँ मुझे जाना है... और शायद मैं भी! देखते ही देखते - उम्म... नहीं, सोते ही सोते - जब अपने खयालों से बहुत दूर जा चुकी थी तभी, किसी का हाथ मेरे सिर पर ऐसे गिरा मानो लोहे की सलाख अचानक आ गिरी हो। मेरी आँखें झट से खुलीं। कुछ पल पहले तक मैं बस की उस खाली सीट पर चुपचाप सो रही थी, लेकिन उस लोहे जैसे स्पर्श ने मुझे नींद से उठाकर एक अजीब दुनिया में पहुँचा दिया। एक ऐसी दुनिया, जहाँ सच और झूठ की लड़ाई तो होती है, पर जीत अक्सर झूठ की ही होती दिखाई देती है।

मुझे यह एहसास उसी क्षण हो गया, जब मेरी शांत नींद को बिना किसी अपराध के उस लोहे जैसे हाथ ने दंड दे डाला। तभी समझ आया- मैं आखिर पहुँच कहाँ गई हूँ। अब तक तो आप समझ ही गए होंगे... जी हाँ, मैं पहुँच चुकी थी उस महान, गंभीर और थोड़ी-सी व्यंग्यपूर्ण दुनिया में, जिसे हम बड़े आदर से 'सुप्रीम कोर्ट' कहते हैं। यह वही जगह है जहाँ न्याय की देवी की आँखों पर पट्टी तो बँधी होती है, पर कभी-कभी लगता है कि आसपास खड़े लोग उसके कानों में धीरे-धीरे कुछ फुसफुसा रहे होते हैं। जहाँ शब्दों के जाल इतने महीन बुने जाते हैं कि सच भी कभी-कभी उनमें उलझ कर थक जाता है और झूठ बड़ी शान से मुस्कुराता हुआ आगे निकल जाता है। लेकिन रुकिए। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। आइए, ज़रा ठहरकर देखें- आखिर उस दिन इस "सच और झूठ की अद्भुत अदालत" में मेरे साथ और क्या-क्या हुआ।

वहाँ मैंने देखा कि कैसे एक ही घटना को दो लोग दो बिल्कुल अलग तरीकों से सच बताने की कोशिश कर रहे थे। कभी किसी की आवाज़ इतनी तेज़ और प्रभावशाली होती कि झूठ भी सच जैसा प्रतीत होने लगता। और कहीं कोई ऐसा भी था जिसकी आँखों में सच्चाई साफ दिखाई दे रही थी, पर उसकी आवाज़ उतनी मज़बूत नहीं थी कि वह सबको विश्वास दिला सके। वहाँ खड़ी-खड़ी मुझे ऐसा लगा मानो सच और झूठ के बीच कोई अदृश्य युद्ध चल रहा हो - पर उस युद्ध में कई बार गलत ही विजयी दिखाई देता था और सच बस खुद को साबित करने में ही लगा रह जाता था। और एक दिन वही सच, उस 'न्याय की अदालत' में महज़ एक 'केस' बन कर रह जाता है।

उस दिन मानो मेरी नींद ने मुझे सपनों की दुनिया से बाहर ला खड़ा कर दिया हो। और सच की उस परत को खोला हो जिससे मैं अनजान थी या शायद अनजान बनने की कोशिश कर रही थी।

तो कुछ ऐसा था मेरी नींद का सफर।

मनीषा तिवारी, प्रथम वर्ष, इतिहास विभाग

गांव से आई लड़की की शहर में मौज मस्ती

लोग सोचते हैं कि लड़की दिल्ली में कॉलेज कर रही हैं, उसे तो न घर परिवार की टेंशन, न शादी की टेंशन, कॉलेज में मजे कर रही हैं। और नौकरी का क्या है, नौकरी तो लगेगी ही। उसके पास एक ही तो काम है, पढ़ने का। वो ही नहीं कर पाएगी तो क्या करेगी।

और यहां हमारी बेचारी गांव की लड़कियों को देखो कितने काम हैं, घर परिवार का काम, अपनी शादी के बारे में सोचना, और साथ में रिश्तेदारों से तारीफे भी तो बटोरनी है ।

अरे इस संकुचित सोच वाले लोगों को कौन समझाए कि इस दिल्ली वाली लड़की की क्या-क्या मौज मस्ती है। सबसे पहले तो सब घर-परिवार, रिश्तेदार वालों के खिलाफ जाकर लड़की दिल्ली केवल कॉलेज डिग्री लेने आ गई।

इसके साथ ही अपनी कॉलेज की पढ़ाई और जो सपना लेकर आई थी यूपीएससी का, उन दोनों को मैनेज नहीं कर पा रही। यह समस्या घर वालो को किस मुंह से कहे, उन्होंने थोड़े कहा था कि दिल्ली जाकर कॉलेज कर और अगर तुमने इसके बारे में बोलने का दुस्साहस कर भी लिया तो ये सुनने के लिये तैयार रहो, “कॉलेज में कौनसी पढ़ाई होती है, टाईम पास ही तो होता है।” और सुनो इस दिल्ली वाली लड़की से, घर वालों से दूर भी नहीं रहा जाता, इसको घर की याद आती हैं, मम्मी की डांट की याद आती हैं, घर के खाने की याद आती है और ये अलग से सुनने को मिलता है कि बार-बार मुंह उठाकर घर चली आती हैं।

चावल खत्म होने वाला है, सब्जी ख़त्म होने वाली है, और जितना हो सके उतने कम पैसों में सारा खर्चा भी मैनेज करना है। इन सबके साथ टाईम निकलता जा रहा हैं। परिवार को ज्यादा उम्मीदें हैं कि लड़की अब तो सफल हो के ही लौटेगी। और यहां ये सोचती है कि ये तो कहीं आ कर उलझ गई, इसको अब कुछ समझ नहीं आ रहा। अब बताए भी तो किसको बताए ये मौज मस्ती की लिस्ट। ओवर थिंकिंग, अकेलापन, तनाव व एडिक्शन और शामिल हो गया इस लिस्ट में।

तो देखो इस गांव से निकली लड़की की मौज मस्ती। अब देखना ये है कि इस मौज मस्ती से निकलकर किस तरह वो आगे बढ़ती हैं।

प्रियांशु कुमारी, तृतीय वर्ष, हिंदी विभाग

यादों का एक सफर

कृति सिंह, द्वितीय वर्ष, हिंदी विभाग

कॉलेज का जीवन केवल पढ़ाई का ही नहीं, बल्कि नए अनुभव और नए रिश्ते बनाने का भी समय होता है। इसी दौरान कुछ लोग ऐसे भी मिलते हैं, जो धीरे धीरे हमारे जीवन का खास हिस्सा बन जाते हैं। मेरे कॉलेज के सफर में मुझे भी एक ऐसा ही दोस्त मिला जिसने इस यात्रा को मेरे लिए थोड़ा अलग और यादगार बना दिया।

अभी मैं द्वितीय वर्ष की छात्रा हूँ लेकिन इतने समय में ही मैंने बहुत कुछ सीखा और जाना है। कॉलेज में पहला कदम रखते समय मेरे मन में कई तरह के भाव थे, उत्साह, जिज्ञासा और थोड़ा सा संकोच भी। सब कुछ नया था। इसलिए हर दिन कुछ नया सीखने और समझने का अवसर मिलता था। इसी नए माहौल में कई लोग मिले लेकिन उन्हीं में से एक ऐसा दोस्त भी मिला जिसने इस सफर को खास बना दिया।

हमारी दोस्ती बिल्कुल साधारण नहीं थी। कभी हंसी-मजाक और खुशियों के पल होते थे, तो कभी छोटी-मोटी बातों पर मनमुटाव भी हो जाता था और मैं रूठ जाती थी। कई बार ऐसा लगा कि शायद अब सब पहले जैसा नहीं रहेगा, लेकिन हर बार समय के साथ सब फिर से सामान्य हो जाता था। शायद यही सच्ची दोस्ती की पहचान होती है, जहां मनमुटाव के बाद भी रिश्तों की गर्माहट बनी रहती है।

समय बीतने के साथ मुझे यह एहसास हुआ कि वह दोस्त बाकी सब से अलग है। उस समय उसकी कई बातें समझ नहीं आती थीं और बुरी लगती थी, कभी-कभी मुझे गुस्सा भी आता था, लेकिन आज महसूस होता है कि उसके हर शब्द के पीछे कहीं न कहीं मेरी और मेरे भविष्य की भलाई ही छिपी थी।

कॉलेज का यह सफर सिर्फ पढ़ाई तक सीमित नहीं रहा बल्कि यहां बने कुछ रिश्ते भी जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए। उनमें से यह रिश्ता भी मेरे लिए बहुत खास है। कुछ रिश्तों की खूबसूरती यही होती है कि उनका नाम जरूरी नहीं होता, उनकी सच्चाई और अहमियत ही उन्हें अनमोल बना देता है।

ठहरने की ज़रूरत है तुम्हें...

ठहरने की ज़रूरत है तुम्हें इस भाग - दौड़ की दुनिया में,
ठहरने की ज़रूरत है तुम्हें उन बेतुकी कहानियों में,
कल की उदासी में और कल की हड़बड़ी में ये भूल चुके हो,
कि एक मन है तुम्हारे पास जो सुकून चाहता है,
एक दिल है तुम्हारे पास जो कुछ पल ही सही
मगर ठहरना चाहता है,
सुकून की लहरों में बहना चाहता है,
बेफिक्री के आसमान में उड़ना चाहता है,
ये भूल गए हो तुम एक दिल है तुम्हारे पास जो सुकून चाहता है,
सवालों के भंवर में उलझ कर सुलझना भूल गए हो,
कल की परवाह में आज में जीना भूल गए हो,
मंसूबों की कुछ ऐसी आदत लगी है कि
इत्तेफाक की कद्र भूल गए हो,
दूसरों की इतनी परवाह है तुम्हें कि खुदका ज़िक्र भूल गए हो।
भूले नहीं आज भी वो किस्से मगर खुदको भूल गए हो,
ये भूल गए हो कि एक मन है, तुम्हारे पास, जो सुकून चाहता है,
एक हिस्सा तुम्हारी रूह का, बस वो सुकून चाहता है,
कहीं जिम्मेदारियों ने बांधा है तुम्हें कहीं उन बेड़ियों ने जकड़ा है,
मालूम नहीं तुम्हें मगर आज भी तुम्हें उस कल ने पकड़ा है,
मशरूफ जिंदगी में इस आईने से रुबरु नहीं तुम,
खामोशी दिखाएगी, जैसा चाहते थे वैसे हूबहू नहीं तुम,
खैर खामियां ही तो बनाती हैं हमें इंसान,
ये खामियां ही तो हैं कोशिशों के निशान,
एक रोज़ इस जंग से मिलेगी आज़ादी,
एक रोज़ इस सुकून की होगी आबादी,
मगर उस रोज़ तक एक बात याद रखना,
कि ठहरने की ज़रूरत है तुम्हें इस भाग दौड़ की दुनिया में,
करार की ज़रूरत है तुम्हें उन बेतुकी कहानियों में,
एक मन है तुम्हारा जो ठहरना चाहता है,
एक दिल है तुम्हारा जो सुकून चाहता है..

नुपुर, तृतीय वर्ष, अंग्रेजी विभाग

विवशता के पहिए

सुबह के पाँच बजे थे। बाहर अभी अंधेरा पूरी तरह छटा नहीं था, लेकिन रामदीन की आँखे खुल चुकी थीं। उसके पास अलार्म वाली घड़ी नहीं थी, पर छत पर टपकती ओस और पड़ोस के मंदिर की पहली घंटी उसके लिए काफी थी। रामदीन ने अपनी फटी हुई चप्पलें पहनीं और आंगन में आकर खड़ा हो गया। सामने उसकी पुरानी साइकिल खड़ी थी, जिसका चैन बार-बार उतर जाता था और गद्दी से रुई बाहर झाँक रही थी। रामदीन शहर की एक बड़ी इमारत में माली का काम करता था। उसकी पत्नी, शांति पास के ही दो घरों में बर्तन माँजती थी। चाय पीते हुए शांति ने दबे स्वर में कहा, "मुन्ने के स्कूल की ड्रेस छोटी हो गई है। मास्टर जी कह रहे थे कि नई दिलवा दो, वरना क्लास में नहीं बैठने देंगे।" रामदीन ने चाय का आखिरी घूँट भरा और चुप रहा। उसने अपने मन-ही- मन में हिसाब लगाया, राशन का उधार आठ सौ, दवाईयाँ चार सौ पचास, और अब ये ड्रेस। “देखता हूँ”, उसने बस इतना ही कहा। दोपहर को जब वह अपने मालिक के बंगले की क्यारियों में पानी डाल रहा था, उसने देखा कि मालिक का बेटा अपनी नई चमचमाती साइकिल पर चक्कर काट रहा है। वह साइकिल इतनी सुंदर थी कि रामदीन को अपनी साइकिल पर शर्म आने लगी।

साहब बाहर आए और बोले, "रामदीन, आज जरा देर तक रुकना, शाम को पार्टी है तो गमलों की सजावट देख लेना, सौ रुपये अलग से दे दूंगा।" रामदीन के चेहरे पर कोई चमक नहीं आई। उसे खुशी तो हुई, पर वह जानता था कि उन सौ रुपयों से ड्रेस नहीं आएगी, बस राशन का थोड़ा उधार कम होगा। शाम को काम खत्म कर जब वह घर लौट रहा था, उसकी नज़र एक छोटी सी कपड़ों की दुकान पर पड़ी। उसने रुककर मुन्ने के नाप की ड्रेस की कीमत पूछी। "साढ़े चार सौ रुपये," दुकानदार ने रुखेपन से कहा। रामदीन की जेब में वही मिले सौ रुपये और कुछ चिल्लर थे। उसने लंबी सांस ली और आगे बढ़ गया। उसने ड्रेस तो नहीं पर पाँच रुपये का एक पुराना खिलौना ज़रूर खरीद लिया, ताकि घर जाकर बेटे की आँखों में कम से कम दस मिनट की चमक देख सके। रात को खाना खाते समय मुन्ने ने खिलौने को देखकर शोर मचाया, खूब उछला कूदा, खुश हुआ। शांति ने रामदीन की तरफ देखा, उसकी आँखों में सवाल था- 'ड्रेस का क्या हुआ?' रामदीन ने नज़रें झुका लीं और सूखी रोटी का निवाला तोड़ते हुए कहा, “कल साहब से बात करूँगा।” दोनों जानते थे कि कल भी कुछ नहीं बदलेगा। मुन्ना कल भी वही छोटी ड्रेस पहनकर स्कूल जाएगा, रामदीन उसी टूटी साइकिल से काम पर जाएगा और सूरज फिर उसी तरह ढलेगा। जीवन किसी फिल्म की तरह क्लाइमेक्स पर खत्म नहीं होता, वह बस चलता रहता है, बिना किसी चमत्कार के।

शिखा द्विवेदी, तृतीय वर्ष, हिंदी विभाग

हिंदी : मेरी आवाज

मेरे लिए हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं,
यह मेरे विचारों की आवाज है।
इसी में मैंने अपने पहले शब्द सीखे,
और इसी में अपने मन की बात कह पाती हूँ।
आज के समय में जब हर तरफ
अंग्रेजी का प्रभाव दिखाई देता है,
तब भी हिंदी की सादगी और अपनापन
दिल को अलग ही सुकून देता है।

कभी-कभी लगता है कि हम
आधुनिक बनने की दौड़ में
अपनी ही पहचान को खोते जा रहे हैं,
पर सच तो यह है कि हिंदी हमारी
जड़ों से जुड़ी हुई है।

हिंदी में बात करते समय जो सहजता
और आत्मीयता महसूस होती है,
वह किसी और भाषा में नहीं मिलती।
शायद इसलिए हिंदी मेरे लिए सिर्फ
शब्दों का माध्यम नहीं, बल्कि मेरी पहचान का हिस्सा है।

कृति सिंह, द्वितीय वर्ष, हिंदी विभाग

स्मृति लेख (एक प्रेरक शिक्षिका की स्मृति में)

हमारे हिंदी विभाग की आदरणीय शिक्षिका प्रोफेसर डॉ. रेणु गौतम मैम व्यक्तित्व, सादगी, कर्मठता और समर्पण का सुंदर उदाहरण थीं। उनका निधन हम सभी के लिए एक गहरी क्षति है। वे केवल एक शिक्षिका ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन का सच्चा स्रोत थीं।

वे लंबे समय से स्वास्थ्य संबंधी कठिनाइयों से जूझ रही थीं, लेकिन उन्होंने कभी अपने कर्तव्य और जिम्मेदारियों से मुंह नहीं मोड़ा।

अपने भीतर चल रहे संघर्ष के बावजूद वे सदैव धैर्य और साहस के साथ जीवन का सामना करती रही। उनका यह दृढ़ संकल्प हमें यह सिखाता है कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, हिम्मत और विश्वास के साथ आगे बढ़ते रहना चाहिए।

वे अत्यंत कर्मठ और प्रेरणादायी शिक्षिका थीं। पढ़ाने के प्रति उनका समर्पण और विद्यार्थियों के प्रति उनका स्नेह हमें हमेशा महसूस होता था। उनकी कक्षा में पढ़ाई केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रहती थी, बल्कि वहां से हमें जीवन को समझने और आगे बढ़ने की प्रेरणा भी मिलती थी।

आज भले ही वे हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी दी हुई सीख, उनका स्नेह और प्रेरणादायक व्यक्तित्व हमेशा हमारी स्मृतियों में जीवित रहेगा। हिंदी विभाग में उनका योगदान और उनकी यादें हम सभी के लिए सदैव अनमोल रहेंगी।

हम सभी उनकी पवित्र स्मृति को नमन करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

कृति सिंह, द्वितीय वर्ष, हिंदी विभाग

संजीव द्वारा रचित साहित्य अकादमी पुरस्कार-2023 से सम्मानित उपन्यास 'मुझे पहचानो' का पात्रों की दृष्टि से विश्लेषण

कथा विपुलता के कारण इस उपन्यास में चरित्रों का बाहुल्य है, फिर भी इसे दोष नहीं माना जा सकता है। ये पात्र अथवा चरित्र उपन्यास को व्यापकता देने के लिए हैं यदि पात्र बाहुल्य है भी तो सप्रयोजन सभी अपनी विशेषताओं में विशिष्ट हैं। उपन्यास के पात्र केवल व्यक्ति नहीं है, बल्कि समाज की मानसिकता, सामाजिक संरचनाओं और व्यवस्था के प्रतीक हैं।

लेखक संजीव ने अपने पात्रों के माध्यम से यह दिखाया है, कि किस प्रकार सत्ता, धर्म और परंपरा मिलकर मनुष्य की स्वतंत्रता और विशेषकर स्त्री के अस्तित्व को दबा देती है। पात्रों का चरित्र-चित्रण करते समय लेखक ने मानवीय संवेदना, आंतरिक संघर्ष और सामाजिक विवशता को बारीकी से उभारा है।

इस उपन्यास में पुरुष पात्रों में रायसाहब (रानी के पुत्र), लालसाहब (राजा की दूसरी पत्नी से उत्पन्न), दूबे (रायसाहब का मैनेजर), मनोज सिंह (लाल साहब का मैनेजर), विजयेंद्र (लाल साहब का बेटा), अछैबर सिंह (बेनामी जमीन के नामधारी मालिक), अनमोल (सावित्री कुंवर का दूसरा पति), उस्मान, खलील मियां, धर्माचार्य (कुलगुरु), अउधू (वक्ता), गया, अनुपम खरे (लाल साहब का होम ट्यूटर), महमूद साहब (पुलिस अफसर), लव और कुश (सावित्री के बेटे) आदि का उल्लेख है। स्त्री पात्र में सावित्री कुंवर, कुलदेवी, कौशल्या, दुर्गावती (लाल साहब की बेटी), रानी साहिबा (रायसाहब और लाल साहब की पत्नी को कहा गया है) आदि स्त्री पात्रों का उल्लेख इस उपन्यास में किया गया है तथा अन्य पात्र में जयंत (हाथी), जयंती (हथिनी) को भी सम्मिलित कर सकते हैं।

सावित्री कुंवर – इस उपन्यास की केंद्रीय नायिका सावित्री कुंवर है। वह शिक्षित है, प्रतिभावान है। उसका विवाह उदयप्रताप के छोटे बेटे अर्थात छोटे रायसाहब से होता है। विवाह पश्चात वह अत्याचार को सहती है। दो वर्ष बाद ही छोटे रायसाहब की मृत्यु हो जाती है और परिवारजनों ने सावित्री कुँवर को सती होने के लिए उसे जलती चिता पर उसके पति के शव के साथ बिठा दिया, सावित्री ने बोला भी कि मेरे पेट में छोटे कुंवर का बीज है परंतु सभी ने बोला जान बचाने को बहाने गढ़ रही है लेकिन सावित्री सती होने से बच जाती है, परंतु सब सोचते है कि वह सीधा सशरीर स्वर्ग पहुंच गई है लेकिन वह नदी की धारा में बहते हुए एक मल्लाह अनमोल के मड़ई में पहुंच जाती है। इस घटना के बाद उसका नया चरित्र उजागर होता है वह अब सामाजिक बंधनों एवं कुरीतियों से मुक्त हो जाती है। इस प्रकार सावित्री कुँवर इस उपन्यास में सती प्रथा की प्रतीकात्मक पात्र के रूप में सामने आती है। उसका जीवन समाज की उस सोच का दर्पण है, जिसमें स्त्री से त्याग, सहनशीलता और मर्यादा की अपेक्षा की जाती है। सावित्री समाज के लिए आदर्श पत्नी और कुल - मर्यादा की प्रतीक बन जाती है, परंतु उसके भीतर एक मौन विद्रोह भी है, जो यथास्थिति से प्रश्न करने की शक्ति देता है। इतना सब कुछ हो जाने के बावजूद सावित्री बिल्कुल हार नहीं मानती बल्कि वह खुद की इस स्थिति से लड़ने के लिए लड़ना चाहती है, आवाज उठाना चाहती है - कितना अजीब लगता है खुद का रोज -रोज जलना! कभी - कभी तो लगता है, तब से लेकर आज तक लगातार जलती ही रही हूं मैं। एक दिन तो मुझे पर्दे के बाहर आना ही पड़ेगा। सावित्री कुँवर साहसी भी है, उपन्यास के अंतिम चरण में हम देखते है, कि सती मंदिर की स्थापना हो रही है और वहां पर मंचीय प्रस्तुति भी है तब वहां सावित्री अपने दोनों बेटों लव और कुश को लेकर दुनिया के सामने आती है, और कहती है – मैं आपके सामने हूं, पांच सालों से हूं आपके सामने, अपने पहचाना नहीं, क्यों? इसलिए कि आपने तो मुझे जला कर पतिलोक भेज दिया था पर मैं ढीठ लौट आई स्वर्ग से। इस प्रकार सावित्री का चरित्र स्त्री की पीड़ा, संघर्ष और आत्म सम्मान की खोज का प्रतीक है।

कुलदेवी – कुलदेवी उदय प्रताप सिंह की दूसरी पत्नी है और लालसाहब की मां है। उपन्यास में वर्णित कथा के अनुसार वह एक निम्न कुल से संबंध रखती थी। इस उपन्यास में कुलदेवी के विषय में अनेक मत-मतांतर मिलते है, परंतु एक मत पर सभी एक थे कि वे जितनी सुंदर थी, उतनी ही गुणवंती। कुलदेवी अत्यंत दयावान स्त्री थी उन्होंने लोगों के लिए बावड़ी बनवाई थी ताकि पानी की कोई कमी न हो। कुलदेवी अत्यंत दूरदर्शी भी प्रतीत होती हैं। उन्होंने राजा उदयप्रताप से कहा होता है, कि मेरी शर्त यही है, कि तुम्हारी रानी तभी बनूंगी जब तुम विधिवत ब्याहता बना कर ले चलोगे। हमें और हमारी संतानों को राजकुल की सारी मान मर्यादा और अधिकार प्राप्त होंगे। उनके इसी शर्त बाद उनको और उनके पुत्र लाल साहब को राजकुल की सारी मान मर्यादा और अधिकार मिले। अगर शायद वह दूर तक न सोचती तो उनको और उनके वंश को अधिकार प्राप्त न होते। परंतु जो स्त्री पूरे रियासत की कुलदेवी बना दी गई थी वह अपने बेटे (लालसाहब) और उनकी रानी साहिबा के लिए प्रतापी खानदान पर एक बदनुमा दाग हैं। उन्होंने जो बावड़ी बनाई थी उसी में कूद कर अपनी जान दे देती है। लोगों का कहना यह भी है कि सारी लड़ाइयां जीत कर बेटे की लड़ाई हारकर ही कहीं आत्महत्या तो नहीं कर ली? इस प्रकार देखते है कि जनता के लिए इतना काम करने के बाद भी जितना लालसाहब और राय साहब ने भी अपने समय में नहीं किया था किन्तु निम्न कुल से संबंध रखने के कारण उस महिमा को नहीं प्राप्त कर सकी, जिसकी वह हकदार थी। और हम यह भी देखते है कि कुलदेवी इतनी गुणवंती, राजकाज में इतनी दक्ष थी तो भी लोगों से उनके बारे में पूछने पर लोग पहले उनकी शारीरिक सुंदरता के बारे में बात करते है बाद में उनके द्वारा किए गए कार्यों की। यह दिखाता है कि किस प्रकार लोग स्त्रियों की शारीरिक सुंदरता को चारित्रिक गुणों की अपेक्षा ज्यादा प्राथमिकता देते है और काफी हद तक यह वर्तमान की भी सच्चाई को उजागर करता है।

रायसाहब – रायसाहब (सुरेन्द्र प्रताप सिंह) का चरित्र सामंती मानसिकता और पुरुष-प्रधान समाज का प्रतीक है। वह अपने अधिकारों और पद का दुरुपयोग करते हुए यह दर्शाता है, कि किस प्रकार सत्ता मनुष्य को अमानवीय बना देती है। राय साहब के माध्यम से लेखक ने यह दिखाया है कि शक्ति का नशा व्यक्ति को संवेदनहीन कर देता है और उसके भीतर का विवेक समाप्त हो जाता है। किसी किसान ने रायसाहब से कहा कि – कुओं और नदी का पानी सूख गया, आपने नदी के किनारे कुएं खोद रखे हैं जो पंप से पानी सोख लेते हैं। उसकी बात सुनने के बजाय रायसाहब के एक आदमी ने किसान को एक तमाचा उसी समय जड़ दिया। यह उनकी अमानवीयता को दर्शाता है।

लाल साहब – लाल साहब उदय प्रताप सिंह के दूसरी पत्नी से जन्मे पुत्र हैं। उनका चरित्र महत्वाकांक्षा और सत्ता-लालसा का प्रतीक है। वह शक्ति प्राप्ति के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार है। उसकी लालसा यह बताती है, कि सामाजिक विभाजन केवल जन्म और वंश से नहीं बल्कि लोभ और स्वार्थ से भी पैदा होता है। लालसाहब स्वभाव से लालची भी है। वैसे लालसाहब और रायसाहब दोनों की आपस में बनती नहीं है लेकिन – हीरे ने दोनों प्रतिद्वंदी भाइयों को चमत्कारिक ढंग से मिला दिया था।

सोनाली, द्वितीय वर्ष, हिंदी विभाग

लशिका, प्रथम वर्ष, हिंदी विभाग

मोहिनी, द्वितीय वर्ष, हिंदी विभाग

विनम्र श्रद्धांजलि

विनम्र श्रद्धांजलि...

दूर्वा पत्रिका 2025-26 के इस अंक के प्रकाशन का समय जहाँ हमारे लिए एक ओर हर्ष और उत्साह का विषय है वहीं दूसरी ओर हमें इस बात के लिए भी गमगीन कर जाता है कि इसी वर्ष हमारे विभाग की शिक्षिका डॉक्टर रेणु गौतम कैंसर जैसी असाध्य बीमारी से साहसपूर्वक लड़ते हुए, ईश्वर की शरण में गईं। उनकी क्षति हिंदी विभाग की ऐसी क्षति है जिसकी किसी भी तरह से पूर्ति नहीं की जा सकती ।
डॉ. रेणु गौतम लेडी श्री राम कॉलेज में दिनांक 12 जुलाई 2005 से 18 नवम्बर 2025 तक कार्यरत रही। डॉक्टर रेणु गौतम एक समर्पित, कर्तव्य निष्ठ शिक्षिका के रूप में हमेशा याद आती हैं।
विद्यार्थियों के साथ उनका प्रेम और लगाव ऐसा था कि विद्यार्थी बिना किसी झिझक व बाधा के अपनी समस्याएं उन्हें बता देते थे। जीवन में भरपूर उत्साह, जीवट, हर कार्य को करने की क्षमता, भरपूर आत्म निर्भरता, किसी भी विषय व कार्य को पूरी तरह से समझना, उसे सही तरह से करना, उसे सही तरह से करने की प्रक्रिया को ज्ञात करना और उसके क्रियान्वयन में किसी तरह की कोई भी कमी नहीं छोड़ना, उनके व्यक्तित्व की अनेक ख़ास विशेषतायें थी।

महाविद्यालय के लिए पूरी तरह से समर्पित वे एक निर्भीक, क्रांतिकारी, स्पष्ट वक्ता शिक्षिका के रूप जानी जाती थीं। हिंदी विभाग डॉक्टर स्व.रेणु गौतम को हमेशा याद रखेगा।

इसी वर्ष हमारे विभाग की अति वरिष्ठ सेवानिवृत सदस्य डॉ. शकुंतला मलिक का भी स्वर्गवास हुआ। विभाग की ओर से उन्हें भी भावभीनी श्रद्धांजलि।

विभागीय गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

शैक्षणिक वर्ष - 2025-26

- ‘वागर्थ 2025-26’ का 12 नवंबर, 2025 को सफल आयोजन हुआ।
- इस दौरान ‘कविता की जरूरत’ विषय पर व्याख्यान हेतु प्रोफेसर रामेश्वर राय तथा प्रोफेसर जसवीर त्यागी वक्ता रूप में आमंत्रित रहे।
- ‘स्वरचित कविता पाठ’ और ‘लघु कथा लेखन’ नामक दो अंतर्महाविद्यालयी प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ जिसमें 120 प्रतिभागी शामिल हुए।
- ‘पुस्तक परिचर्चा’ नामक कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें संजीव के उपन्यास ‘मुझे पहचानो’ पर समृद्धि (तृतीय वर्ष), पूर्णिमा (तृतीय वर्ष), सोनाली (द्वितीय वर्ष) तथा सोनम (प्रथम वर्ष) ने भाग लिया।
- कार्यक्रम में 100 छात्राओं की उपस्थिति रही।

- विश्व हिंदी दिवस के अवसर पे 12 जनवरी, 2026 को अंतरराष्ट्रीय व्याख्यान का आयोजन हुआ।
- प्रवासी साहित्यकार अर्चना पैन्यूली ने ‘हिंदी भाषा और प्रवासी लेखन’ विषय पर व्याख्यान दिया।

- 6 अप्रैल 2026 को ‘बिंदु अग्रवाल छात्रवृत्ति समारोह’ आयोजित किया गया।
- डॉ. मधु ग्रोवर तथा प्रोफेसर मीनाक्षी भारत कार्यक्रम में उपस्थित रहे।
- विभाग की तीन छात्राओं, अंजली (तृतीय वर्ष), सोनाली (द्वितीय वर्ष) तथा मोहिनी (द्वितीय वर्ष) को उनके शैक्षणिक गुणों के आधार पर बिंदु अग्रवाल छात्रवृत्ति से पुरस्कृत किया गया।

- कोर टीम गठन- वभागीयगतिविधियों को सुचारू रूप से आयोजित करने के लिए कोर टीम का गठन किया गया।
- 26 अप्रैल 2025 को तृतीय वर्ष की छात्राओं के लिए ‘विदाई समारोह’ का आयोजन किया जीएम
- 2 अगस्त को नए बैच के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन हुआ।
- प्रथम वर्ष की छात्राओं के स्वागत के लिए ‘फ्रेशर्स’ का आयोजन हुआ।

विभागीय गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

शैक्षणिक वर्ष - 2025-26

नाम	वर्ष	प्रतियोगिता	स्थान
सौम्या	प्रथम वर्ष	एंटी रैगिंग स्लोगन लेखन प्रतियोगिता	तृतीय
सौम्या	प्रथम वर्ष	ग्रीन कैंपस, क्लीन कैंपस	द्वितीय
मनीषा	प्रथम वर्ष	दोहा वाचन	तृतीय
श्रेया शुक्ला	तृतीय वर्ष	दोहा वाचन	टॉप 5
श्रेया शुक्ला	तृतीय वर्ष	कविता लेखन	टॉप 4
अंजली	तृतीय वर्ष	जूडो, डीबीआर,2026	द्वितीय
अंजली	तृतीय वर्ष	क्रुराश, डीबीआर, 2026	तृतीय
अंजली	तृतीय वर्ष	जूडो, स्वाभिमान 2026	द्वितीय
सोनम	प्रथम वर्ष	पुस्तक परिचर्चा	मेरिट सर्टिफिकेट
ज्योति यादव	प्रथम वर्ष	हिंदी लेखन प्रतियोगिता	द्वितीय
अंजली	तृतीय वर्ष	डॉ बिंदु अग्रवाल छात्रवृत्ति	मेरिट सर्टिफिकेट
अंजली	तृतीय वर्ष	श्री ओंकार नाथ पंडित स्कॉलरशिप	प्रथम
सोनी	तृतीय वर्ष	जूडो, डीबीआर,2026	द्वितीय
सोनी	तृतीय वर्ष	जूडो, स्वाभिमान 2026	तृतीय
सोनी	तृतीय वर्ष	हिंदी साहित्य प्रश्नोतरी प्रतियोग्रिता	द्वितीय
सोनी	तृतीय वर्ष	साहित्य प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता	तृतीय

विभागीय गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

शैक्षणिक वर्ष - 2025-26

नाम	वर्ष	प्रतियोगिता	स्थान
शिवानी सिंह	तृतीय वर्ष	हिंदी साहित्य प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता	द्वितीय
शिवानी सिंह	तृतीय वर्ष	साहित्य प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता	द्वितीय
शिवानी सिंह	तृतीय वर्ष	साहित्य प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता	तृतीय
लशिका	प्रथम वर्ष	कविता लेखन, टैलेंट एक्स	तीसरे राऊंड में फाइनलिस्ट
मोहिनी	द्वितीय वर्ष	डॉ बिंदु अग्रवाल छात्रवृत्ति	मेरिट सर्टिफिकेट
सोनाली	द्वितीय वर्ष	डॉ बिंदु अग्रवाल छात्रवृत्ति	मेरिट सर्टिफिकेट
सोनाली	द्वितीय वर्ष	पुस्तक परिचर्चा	मेरिट सर्टिफिकेट
ज्योति	प्रथम वर्ष	ग्रीन कैंपस, क्लीन कैंपस	प्रथम
स्नेहा मलिक	प्रथम वर्ष	रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता	मेरिट सर्टिफिकेट
स्नेहा मलिक	प्रथम वर्ष	स्वरचित कविता गान	मेरिट सर्टिफिकेट
अंशिका	द्वितीय वर्ष	कहानी लेखन प्रतियोगिता	मेरिट सर्टिफिकेट
समृद्धि मिश्रा	तृतीय वर्ष	पुस्तक परिचर्चा	मेरिट सर्टिफिकेट
पूर्णिमा	तृतीय वर्ष	पुस्तक परिचर्चा	मेरिट सर्टिफिकेट
कृति सिंह	द्वितीय वर्ष	कहानी लेखन प्रतियोगिता	मेरिट सर्टिफिकेट
श्रेया माधवी	द्वितीय वर्ष	कविता दोहा वाचन	टॉप 5
श्रेया माधवी	द्वितीय वर्ष	पेंटिंग प्रतियोगिता	द्वितीय

वागर्थ 2025 - 26

कविता की जरूरत

- प्रोफेसर रामेश्वर राय
- कविता का महत्व स्थापित करते हुए बताया कि यह शब्दों में नहीं भंगिमाओं में है। कविता जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त है।
- कविता पढ़ने की तीन शर्तें हैं-
- 1. बुनियादी संवेदनशीलता
- 2. भाषा का एक संस्कार, भाषा में एक तमीज़, सम्मान और लगाव
- 3. कल्पना
- कल्पना → जो है उससे बेहतर
- बाजार ने हमारी कल्पना को नष्ट किया है।
- कविता स्वप्न देखती है,कल्पना करती है।
- कविता की जरूरत उसे है जो मनुष्य बने रहना चाहता है।

- प्रोफेसर जसवीर त्यागी
- राजनैतिक पार्टियों को भी कविता की जरूरत पड़ती है।
- विज्ञापन में कविता का महत्व
- भाव भंगिमाओं में भी कविता छिपी होती है, जबतक उनके बीच में संवेदना हो।
- पुराने गीत भी कविता की शैली में ही लिखे गए हैं।
- अपनी कई कविताओं का पाठन किया।

प्रोफेसर रामेश्वर राय

प्रोफेसर जसवीर त्यागी

अंतरराष्ट्रीय व्याख्यान

‘हिंदी भाषा और प्रवासी लेखन’

अर्चना पैन्यूली

- भाषा विचार तथा भविष्य से जुड़ा एक गहरा विषय है।
- भाषा के क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं।
- क्या हिंदी में भविष्य है? भविष्य भाषा में नहीं भाषा प्रयोग करने वालों में है।
- यह संस्कृति तथा परम्परा की प्रवाहिका है।
- हिंदी भाषा की सभी अनिवार्यता से परिपूर्ण है। यह एक वैश्विक भाषा है।
- विदेशों में भारत के प्रति रुझान बढ़ा है। हिंदी वह भारतीय भाषा है जो वैश्विक स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व कर सकती है।
- “किसी देश की भाषा की मांग, वहाँ के शक्ति का चित्रण करती है।”
- प्रवासी साहित्य के उद्भव तथा भारतीय प्रवासी लेखन के इतिहास के विषय में जानकारी दी।
- प्रवासी साहित्य की प्रमुख विशेषताएं -
- दो धरातल (जन्मभूमि तथा कर्मभूमि) पर गढ़ी गई कहानी
- विविध वैश्विक मुद्दे शामिल
- बीच की एक धरातल जहाँ दो संस्कृतियों का मेल होता है।
- डेनिश, यूरोपियन, अमेरिकन कल्चर का प्रभाव
- प्रवासी साहित्य के प्रमुख थीम हैं तुलना करना, अकेलापन, टूटते पारिवारिक संबंध, सांस्कृतिक समूह आदि।
- यह स्मृति नहीं, पुनः सृजन का साहित्य है।
- प्रवासी साहित्य की दृष्टि में देशों को विभक्त करती रेखाएं खो जाती हैं।
- विभिन्न संस्कृतियों के बीच असमानता से अधिक समानता है।
- प्रवासी लेखन कहानी, उपन्यास, डायरी लेखन, कविता आदि कई विधाओं में लिखी जा रही हैं।
- आने वाले समय में प्रवासी लेखन के लिए कई संभावनाएं हैं जैसे - ‘हाइब्रिड कल्चर’ की जटिलताएं, दूसरी पीढ़ी के प्रवासियों की समस्या, प्रवासियों के संबंध में बदलती राजनीति, अस्मिता से जुड़े प्रश्न आदि
- हिंदी प्रवासी लेखन संभावनाओं से भरपूर, दो संस्कृति से उपजा, समकालीन मानव केंद्रित साहित्य है।

हिंदी साहित्य सभा

2025-26

शिक्षक सलाहकार

डॉ. रेणु गौतम

(कार्यकाल: 1 अगस्त - 18 नवंबर 2025) तक

डॉ.पूनम मीणा

छात्र संघ

श्रेया शुक्ला

अध्यक्ष

श्रेया माधवी

सचिव

कृति सिंह

कोषाध्यक्ष

vivo T3 Lite

NESCAFÉ

शैक्षणिक वर्ष
2025-26

लेडी श्रीराम कॉलेज फ़ॉर वीमेन

लाजपत नगर-IV, नई दिल्ली – 110024, भारत
फ़ोन नंबर: 91-11-26434459
https://lsr.edu.in